# भारतीय महिलाओं के आधुनिकरण में परिवार एवं समाज का योगदान

**सिम्मी कुमारी**
शोधार्थी, गृह विज्ञान विभाग,
ल.ना.मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा।

## सारांशः–

प्रत्येक देश की आधी आबादी महिलाओं पर आधारित होती है। महिलाओं के बारे में विभिन्न प्रकार के दृष्टिकोण पाए जाते हैं। एक गुट का यह मानना है कि महिलाएँ न्यूनतम अधिकारों की स्वामी हैं क्योकि वे दूसरे नंबर की नागरिक हैं इसलिए उन्हें सामाजिक गतिविधियों से वंचित रहना चाहिए। इस विचारधारा के मुकाबले में एक गुट ऐसा भी है जिसका मानना है महिलाओं के अधिकारो को पूरे इतिहास में अनदेखा किया गया इसलिए इस अत्याचार के बदले उनको समान अधिकार दिये जाए बल्कि इससे बढ़कर महिलाओं को पुरूषों पर वरीयता दी जानी चाहिए। इसी बीच महिलाओं के बारे में इस्लाम ने बहुत ही संतुलित विचार धारा प्रस्तुत की है। इस्लाम, महिलाओं के लिए मानवीय अधिकारो की बात करता है।

अतीत में कुछ ऐसी अतिवादी विचारधाराएँ प्रचलित थी जिनके अन्तर्गत महिला को दूसरे नम्बर का नागरिक माना जाता था। इस अतिवादी विचारधारा में उसे मानव की श्रीणी में नही रखा गया है। यही कारण है कि इस विचारधारा में महिलाओं को मानवीय अधिकारों से वंचित रखा गया है इसलिए वह मानवीय उच्चता को प्राप्त नहीं कर सकती है।

पश्चिम में नारी की स्थिति के संदर्भ में ईरान के वरिष्ठ धर्मगुरू शहीद मुर्तजा मुंतहरी लिखते है कि प्राचीन काल में महिला को इंसान नही समझा जाता था जबकि वर्तमान में उसे महिला ही नही समझा जाता। एक अमरीकी लेखक सोसन फालूडी का मानना है कि महिला की आधुनिक स्वतंत्रता में एक संदेश छिपा हुआ है कि वर्त्तमान समय में तुम स्वतंत्र और समान अधिकारों की स्वामी तो हो किंतु हर काल से अधिक दुर्भाग्यशाली हो।

**मूल शब्दः– दृष्टिकोण, विचारधारा, मुकाबने, गुट, अत्याचार, मूल शब्द अधिकार, बरीयता, इस्लाम, संतुलित स्वतंत्रता, संदेश वर्तमान, स्वामी**

**प्रस्तावनाः–**

रैडिकल फेमिनिज्म ने महिला की प्रमुख भूमिका, उनकी माता की भूमिका और बच्चों के प्रशिक्षण का मखौल उड़ाया और उसे महिला की प्रगति के मार्ग में बाधा बताया। यह बात उल्लेखनीय है कि रैडिकल फेमिनिज्म की ओर से जिस मातृत्व का मखौल उड़ाया गया उसी के बारे में महिलावादियों का यह कहना है कि माँ होना किसी महिला की परिपूर्णता है। एक अमरीकी लेखक टोनी ग्रेट लिखते हैं कि वर्त्तमान महिला की अब भी यह इच्छा है कि वह माँ बने। महिलाओं के सम्बन्ध में अपनाए जाने वाले अतिवादी विचारो के ही कारण उनकी बहुत–सी क्षमताएँ उजागर नही हो सकीं।[2]

इसी बीच महिलाओं के संबंध में पाए जाने वाले विभिन्न प्रकार के असंतुलित विचारधारा पेश की है। इस्लामी विचारधारा के अनुसार यद्यपि महिला और पुरूषए शारीरिक बनावट की दृष्टि से भिन्न है और उनमें असमानता पाई जाती किन्तु मानव अधिकारो की दृष्टि से वे समान अधिकार के स्वामी हैं। इस्लाम का मानना है कि एक महिला समाज मे सक्रिय भूमिका निभा सकती है।

इस्लाम, महिला को मानवीय दृष्टि से देखता है। इस देखता है। इस दृष्टिकोण से महिला भी प्रतिष्ठित मनुष्य है और उसे समाज एवं परिवार का महत्वपूर्ण आधार समझा जाता है। इस दृष्टिकोण के आधार पर विभिन्न सामाजिक गतिविधियों में महिला की उपस्थिति परिवार के गठन और उसे मजबूत बनाने की दिशा में कोई बाधा नही है। उल्लेखनीय है कि समाज का पहला आधार परिवार है जिसकी समाज की सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका है। महिला के स्थान और उसके महत्व के बारे में पैगम्बरे इस्लाम (स) के बहुत से कथन मौजूद है। वे महिला के व्यक्तित्व को विशेष महत्व देते थे और उनके साथ कृपाल ढंग से व्यवहार करने का आहवान करते थे पैगम्बर इस्लाम कहते हैं कि महान लोग ही महिलाओ का सम्मान करते हैं और नीच लोग उनका अपमान करते है।

पैगम्बरे इस्लाम अपनी पत्नियो के साथ मेहरबान थे। वे उनके बीच न्याय से काम लेते थे। अपनी धर्मपत्नी हजरत खदीजा के बारे में वे कहते है कि ईश्वर ने उनसे अच्छा कोई मुझको नही दिया। वे ऐसे समय में मेरे ऊपर ईमान लाई कि जब लोग काफिर थे। वे ऐसे समय में मुझको सच्चा कहती थीं जब लोग मुझको झूठा कहते थे। महिलाओं के बारे में लोगों से वे आग्रह करते हैं। कि तुम महिलाओं के साथ कृपालु ढंग से व्यवहार करो।

अपनी सुपत्री हजरत फातेमा के साथ पैगम्बरे इस्लाम का व्यवहार प्रशंसनीय है। वे हजरत फ़तेमा का विशेष सम्मान करते थे। इतिहास में मिलता है कि बहुत से सथान पर वे हजरत फातेमा के सम्मान में खड़े हो जाते थे। वे अपने स्थान पर हजरत फातेमा को बैठाते थे। पैगम्बरे इस्लाम कहते हैं कि फातेमा मेरा टुकड़ा है। वह मुझसे प्रेम करता है और जिसने उसे पीड़ा पहुँचाई उसने मुझे पीड़ा पहँचाईं पैगम्बरे इस्लाम इस बात का प्रयास किया करते थे कि सामाजिक जीवन में महिलाओं को उनकी पहचान दी जाए और वे अपने भाग्य का निर्धारण स्वयं करें। अपने काल में उन्होंने महिलाओं के समाज के हर क्षेत्र में सक्रिय रहने के लिए प्रयास किये। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि पैगम्बरे इस्लाम के काल में महिलाएँ, सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्रों में सक्रिय रहीं।[3]

महिला, परिवार का आधार हैं स्पष्ट सी बात है कि परिवार की केन्दीय परिधि के रूप में महिला की भूमिका, समाज में एकता उत्पन्न करने में बहुत अधिक प्रभावी रही है। यदि कोई महिला इस्लामी शिक्षाओं का अनुसरण करते हुए अपने दायित्वों का निर्वाह करती है तो वह अपनी संतान के लिए आदर्श के रूप में बदल जाती है। बहुत से समाज शास्त्रियों का कहना है कि यदि माताएँ अपनी संतान के प्रशिक्षण में बंधुत्व, भाईचारे और समानता को दृष्टिगत रखे तो आगामी पीढ़ियों में एकता को बनाए रखा जा सकता है। इस्लामी शिक्षाओं को व्यवहारिक बनाकर बच्चों को दिया जाने वाला प्रशिक्षण, निश्चित रूप से एक सफल समाज के गठन की भूमिका प्रशस्त कर सकता है।

## राष्ट्र निर्माण में महिलाओं का योगदान :–

जब भारतीय ऋषियों ने अथर्ववेद में 'माता भूमिः पुत्रों अहं पृथिव्या' (अर्थात् भूमि मेरी माता है और हम इस धरा के पुत्र है) की प्रतिष्ठा की तभी सम्पूर्ण विश्व में नारी– महिमा का उद्घोष हो गया था। नेपोलियन बोनापार्ट ने नारी की महत्ता को बताते हुए कहा था कि, 'मुझे एक योग्य माता दे दो, मैं तुमको एक योग्य राष्ट्र दूँगा।

भारतीय जन–जीवन की मूल धुरी नारी (माता) है। यदि यह कहा जाय कि संस्कृति, परम्परा या धरोहर नारी के कारण ही पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तांतरित होती रही है, तो यह अतिशयोक्ति नही होगी। जब–जब समाज में जड़ता आयी है, नारी शक्ति ने ही उसे जागने के लिए, उससे जूझने के लिए, अपनी सन्तति को तैयार करके, आगे बढ़ने का संकल्प दिया है।

कौन भूल सकता है माता जीजाबाई को, जिसकी शिक्ष–दीक्षा ने शिवजी को महान देशभक्त और कुशल योद्ध बनाया। कौन भूल सकता है पन्ना धाय के बलिदान को पन्नाधायका उत्कृष्टि त्याग एवं आदर्श इतिहास के स्वर्ण अक्षरों में अंकित है। वह उच्च कोटि का कर्त्तव्यपरायणता थी। अपने बच्चे का बलिदान देकर राजकुमार का जीवन बचाना सामानय कार्य नही। हाड़ी रानी के त्याग एवं बलिदान की कहानी तो भारत के घर–घर में गायी जाती है। रानी लक्ष्मीबाई, रजिया सुल्तान, पद्मिनी और मीरा के शौर्य एवं भक्ति ने मध्यकाल की विकट परिस्थितियों में भी आपनी सुकीर्ति का झण्डा फहराया। कैसे कोई स्मरण न करे उस विद्यावती का जिसका पुत्र फांसी के तख्ते पर खड़ा था और मॉ की ऑखों में ऑसू देखकर पत्रकारो ने पूछा कि एक शहीद की मॉ होकर आप रो रही हैं तो विद्यावती का उत्तर था कि, ''मैं अपने पुत्र की शहीदी पर नहीं रा रही, कदाचित् अपनी कोख पर रो रही हूँ कि काश मेरी कोख ने एक और भगत सिंह पैदा किया होता, तो मैं उसे भी देश की स्वतंत्रता के लिए समर्पित कर देती।' ऐसा था भारतीय माताओं का आदर्श। ऐसी थी उनकी राष्ट्र के प्रति निष्ठा।

परिवार के केन्द्र में नारी है। परिवार के सारे घटक उसी के चतुर्दिक घूमते हैं, वहीं पोषण पाते हैं और विश्राम। वही सबको एक माला में पिरोये रखने का प्रयास करती है। किसी भी समाज का स्वरूप वहाँ की नारी की स्थिति पर निर्भर करताा है। यदि उसकी स्थिति सुदृढ़ एवं सम्मानजनक है तो समाज भी सुदृढ़ एवं मजबूत होगा। भारतीय महिला सृष्टि के आरंभ से अनन्त गुणों की आगार रही है। पृथ्वी की सी सहनशीलता, सूर्य जैसा शीतलता महिला में विद्यमान है। वह दया, करूणा, ममता, सहिष्णुता और प्रेम की पवित्र मूर्ति है। नारी का त्याग और बलिदान भारतीय संस्कृति की अमूल्य निधि है। बाल्यावस्था से लेकर मृत्युपर्यन्त वह हमारी संरक्षिका बनी रहती है। सीता, सावित्री, गार्गी, मैत्रेयी जैसी महान् नारियों ने इस देश को अलंकृत किया है। निश्चित ही महिला इस सृष्टि की सबसे सुन्दर कृति तो है ही, साथ ही एक समर्थ अस्तित्व भी है।

वह जननी है, अतः मातृत्व महिला से मंडित है। वह सहचरी है, इसलिए अर्द्धांगिनी के सौभाग्य से शृंगारित है। वह गृहस्वामिनी है, इसलिए अन्नपूर्णा के ऐश्वर्य से अलंकृत है। वह शिशु की प्रथम शिक्षिका है, इसलिए गुरु की गरिमा से गौरवान्वित है। महिला घर, समाज और राष्ट्र का आदर्श है। कोई पुण्य कार्य, यज्ञ, अनुष्ठान, निर्माण आदि महिला के बिना पूर्ण नहीं होता है। सशक्त महिला सशक्त समाज की आधारशिला है। महिला सृष्टि का उत्सव, मानव की जननी, बालक की पहली गुरु तथा पुरुष की प्रेरणा है।

यदि महिला को श्रद्धा की भावना अर्पित की जाए तो वह विश्व के कण–कण को स्वर्गिक भावनाओं से ओत–प्रोत कर सकती है। महिला एक सनातन शक्ति है। वह आदिकाल से उन सामाजिक दायित्वों को अपने कन्धों पर उठाए आ रही है, जिसे अगर पुरुषों के कन्धे पर डाल दिया गया होता, तो वह कब का लड़खड़ा गया होता। पुरातन कालीन भारत में महिलाओं को उच्च स्थान प्राप्त था। पुरुषों के समान ही उन्हें सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक कृत्यों में भाग लेने का अधिकार था। वे रणक्षेत्र में भी पति को सहयोग देती थी। देवासुर

संग्राम में कैकेयी ने अपने अद्वितीय रणकौशल से महाराज दशरथ को चकित कर दिया था। याज्ञवल्क्य की सहधर्मिणी गार्गी ने आध्यात्मिक धन के समक्ष सांसारिक धन तुच्छ है, सिद्ध करके समाज में अपना आदरणीय स्थान प्राप्त किया था। विद्योत्तमा की भूमिका सराहनीय है, जिसने कालिदास को संस्कृत का प्रकाण्ड पंडित बनाने में सफलता प्राप्त की। तुलसीदास जी के जीवन को आध्यात्मिक चेतना देने में उनकी पत्नी का ही बुद्धि चातुर्य था। मिथिला के महापंडित मंडनमिश्र की धर्मपत्नी विदुषी भारती ने शंकराचार्य जैसे महाज्ञानी व्यक्तित्व को भी शास्त्रार्थ में पराजित किया था।

इस्लामिक आक्रमणों के अनन्तर भारत का सारा परिदृश्य ही बदल गया। मलिक काफूर, अलाउद्दीन तथा औरंगजेब–सरीखे आततायियों ने तो मनुष्यता की परिभाषा को ही झूठला दिया। सल्तनत–काल के इसी नैतिकताविहीन वातावरण में नारियों के साथ भी अपरिमित अत्याचार हुए। उसके पास विजेता की भोग्या बन जाने अथवा आत्मघात कर लेने के अतिरिक्त और उपाय ही क्या था ? फलतः असहाय नारियाँ आक्रांताओं की भोग्या बनती रही। लेकिन यह ध्यान रहे कि यह भारत की पराधीनता के काल थे, स्वाधीनता के नहीं।

अब हम स्वतंत्रता आंदोलन के कालखण्ड को देखें तो हम देखते हैं कि भारत के स्वतंत्रता–संग्राम में महिलाओं ने जितनी बड़ी संख्या में भाग लिया, उससे सिद्ध होता है कि समय आने पर महिलाएँ प्रेम की पुकार को विद्रोह की हुंकार में तब्दील कर राष्ट्रीय अखण्डता को अक्षुण्ण बनाने में अपना सर्वस्व समर्पित कर सकती हैं। रानी लक्ष्मीबाई, सरोजनी नायडू, मादाम भिखाजी कामा, अरूणा आसफ अली, एनी बेसेन्ट, भगिनी निवेदिता, सुचेता कृपलानी, कैप्टन लक्ष्मी सहगल, दुर्गा भाभी एवं क्रांतिकारियों को सहयोग देने वाली अनेक महिलाएँ भारत में अवतरित हुईं, जिन्होंने राष्ट्र निर्माण के लिए अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया। इतिहास साक्षी है जब–जब समाज या राष्ट्र ने नारी को अवसर तथा अधिकार दिया है, तब–तब नारी ने विश्व के समक्ष श्रेष्ठ उदाहरण ही प्रस्तुत किया है।

मैत्रेयी, गार्गी, विश्ववारा, घोषा, अपाला, विदुषी भारती आदि विदुषी स्त्रियाँ शिक्षा के क्षेत्र में अपने बहुमूल्य योगदान के लिए आज भी पूजनीय हैं। आधुनिक काल में महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान, महाश्वेता देवी, अमृता प्रीतम आदि स्त्रियों ने साहित्य तथा राष्ट्र की प्रगति में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी हैं। कला के क्षेत्र में लता मंगेश्वर, देविका रानी, वैजयन्ती माला, सोनाल मानसिंह आदि का योगदान वास्तव में प्रशंसनीय है। वर्त्तमान में महिलाएँ समाज सेवा, राष्ट्र निर्माण और राष्ट्र–उत्थान के अनेक कार्यों में लगी हैं। महिलाओं ने अपनी कर्त्तव्य परायणता से यह सिद्ध किया है कि वे किसी भी स्तर पर पुरुषों से कम नहीं है।

शारीरिक एवं मानसिक कोमलता के कारण महिलाओं को रक्षा सम्बन्धी सेवाओं के उपयुक्त नहीं माना जाता था, किन्तु भारत की पहली महिला आई.पी.एस. श्रीमती किरण बेदी ने ही अपनी कर्तव्यनिष्ठा से इस मिथक को पूरी तरह तोड़ दिया। अत्यंत ही हर्ष का विषय है, कि अब महिला जगत का बहुत बड़ा भाग अपनी संवादहीनता, भीरूता एवं संकोचशीलता से मुक्त होकर सुदृढ़ समाज के सृजन में अपनी भागीदारी के लिए प्रस्तुत है। समस्त सामाजिक संदर्भों से जुड़ी महिलाओं की सक्रियता को अब न केवल पुरुष वरन् परिवार, समाज एवं राष्ट्र ने भी सगर्व स्वीकारा है। वर्तमान में नारी शक्ति का फैलाव इतना घनीभूत हो गया है कि कोई भी क्षेत्र इसके सम्पर्क से अछूता नहीं है। आज नारी पुरुषों के समान ही सुशिक्षित, सक्षम एवं सफल है। चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो, साहित्य, चिकित्सा, सेना, पुलिस, प्रशासन, व्यापार, समाज सुधार, पत्रकारिता, मीडिया एवं कला का क्षेत्र हो, नारी की उपस्थिति, योग्यता एवं उपलब्धियाँ स्वयं अपना प्रत्यक्ष परिचय प्रस्तुत कर रही है। घर परिवार से लेकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक उसकी कृति पताका लहरा रही है।

दोहरे दायित्वों से लदी महिलाओं ने अपनी दोगुनी शक्ति का प्रदर्शन कर सिद्ध कर दिया है कि समाज की उन्नति आज केवल पुरुषों के कन्धे पर नहीं, अपितु उनके हाथों का सहारा लेकर भी ऊँचाइयों की ओर अग्रसर होती है। उन्नत राष्ट्र की कल्पना तभी यथार्थ का रूप धारण कर सकती है, जब महिला सशक्त होकर राष्ट्र को सशक्त करें। महिला स्वयं सिद्धा है, वह गुणों की सम्पदा हैं। आवश्यकता है इन शक्तियों को महज प्रोत्साहन देने की। यही समय की मांग है।

हवा में अजीब–सी गंदगी घुल गई है मानव–मस्तिष्क पर विपरीत असर कर रही है। पाश्चात्य से बटोरा है हमने काम–ग्रसित समाज जिसने हमारी भावनओं को काम के वशीभूत किया है। लिया है हमने पाश्चात्य से अतिमहत्वाकांक्षी होने का मन्त्र जिसने हमें हमारे सामाजिक परिवेश में अनुशासनहीन जीवन जीने की ओर अग्रसर किया है जाना है हमने पाश्चात्य से न्यूक्लीयर युक्त समाज में जीवन जीने का तंत्र। इस तंत्र ने मानव सभ्यता को इसके अंत पर लाकर खड़ा किया है। पाश्चात्य से हमने सीखा है वर्णशंकर युक्त नई पीढ़ी के साथ जीवन जीने का मार्ग, यह मार्ग बड़ा आसाँ है हमारे भारत धर्म भारतीय की संस्कृति को अधोगति में ले जाने के लिए। चाहिए तो था हम बटोरते कुछ ऐसा पाश्चात्य संस्कृति से जो उसे हमसे कुछ मायनों में आदर्श बनाती है जैसे कि हम उनकी ही तरह ईमानदार होते, राष्ट्र के प्रति समर्पित होते, राष्ट्रप्रेमी होते, अनुशासित होते जो हमें सम्पूर्ण मानव बनने में सहायक होती। हम एक आदर्श भारतीय समाज का निर्माण कर पाते हम आसमान पर चमकते न कि भ्रष्टाचार, बलात्कार, अपराध की सूचि में सबसे ऊपर होते।

कम–से–कम कपड़े पहने अधिक–से अधिक शरीर का प्रदर्शन करना यदि मॉर्डन है तो आदिवासी ज्यादा मॉर्डन और सभ्य हुए। संस्कृति का उद्देश्य मानव जीवन को सुंदर बनाना है। परन्तु पाश्चात्य संस्कृति में चमकते कांच झिलमिलाते रोशनी, शराब का प्याला और साथ में खड़ी अर्धनग्न लड़की उद्देश्य होता है। ऐसा लगता है टेलीविजन में दिखाए जाने वाले सिनेमा, सीरियल, विज्ञापन में अर्धनग्न महिलाओं को दिखाए जाने की अनुमति है। आइटम गर्ल और आइटम सांग के बिना कोई फिल्म बॉक्स ऑफिस में हिट नहीं होती। पहनावे में भड़काउपन और खुलेपन की सोच के कारण स्त्री देवी के स्थान पर भोग्या बन गई। जहाँ पहले रिश्तों की अहमियता थी शादियाँ पूरी जिंदगी चलती थी आजकल रिश्ते चिप्स के पैकेट की तरह हो गए खाकर फेंक दिए। अवैध संबंधों की बाढ़ आ गई है। इस कारण अपराध की रोज बढ़ोत्तरी हो रही है। इन विचारों ने लोगों को कितना आजाद किया ये वही जाने धर्म और देश विध्वंस की ओर जा रहा है। यदि अपना अस्तित्व बनाए रखना है तो इस छद्म आधुनिकता और वास्तविकता आधुनिकता के बीच अंतर समझना होगा। आधुनिकता के नाम पर हमारी संस्कृति को नष्ट करने का प्रयास किया जा रहा है।

आज साड़ी को गरिमामय मानें तो लोगों का कहना है कि पेट आधा क्यूं खुला है क्या आधुनिक ब्लाउज है आदि। जिसके पास संस्कार है उसे शोभनीय और अशोभनीय का ख्याल रहता है और जिसके पास संस्कार ना हो, लज्जा न हो, तो उससे क्या उम्मीद रखना। वैसे गंदे लोग अच्छी बातों में गंदगी ढूंढने का प्रयास ही करते हैं।

अक्सर लोगों की जुबान पर होता है कि महिलाएँ पश्चिम का अंधानुकरण कर रही है क्या पश्चिम का कोई भी दुष्प्रभाव पुरुषों पर नहीं होता ? बात स्त्री और पुरुष को वर्गीकृत करने के लिए नही है जो मर्यादा के बाहर जाएगा वह दोषी है पुरुषों की बात करें तो उनकी सोच है... जिन कपड़ों में कोई दीगर लड़की लगती है बड़ी कामुक... घर पहुँचकर उनकी सोच बदल जाती है तब वे कहते हैं छलकता हैं भोला बचपन, जब पहनती है मेरी सोलह बरस की बच्ची।

वाह क्या बात है भूल जाते हैं वे कि सुविधा की दृष्टि से धोती छोड़कर फुलपेंट अपनाई थी पर महिला उन्हें हमेशा भारतीय परिधान में दिखनी चाहिए।

लज्जा स्त्रियों का आभूषण है तो क्या पुरुषों को निर्लज्ज होना चाहिए। जगह–जगह लौलुप दृष्टि वाले अमर्यादित व्यक्ति दिख जाएंगे जो बलात्कार, छेड़खानी जैसी घटनाओं को अंजाम देते हैं।

हमारा दुर्भाग्य है कि हमने पहनावे में नकल कर ली पर अपनी अक्ल विकसित नहीं कर पाए। फैशन के दुष्प्रभाव पुरुष व स्त्री दोनों में समान रूप से है। पहनावें में स्वतंत्रता जरूरी है पर फूहड़पन नहीं। इसलिए यही संदेश देना चाहूंगी कि भारतीय संस्कृति के लिए दु:शासन मत बनो। सभ्य कपड़े पहनों वरना आने वाले समय में बेटी को पालना मुश्किल हो जाएगा। जिस समाज में नारी सुरक्षित नहीं है वह समाज नहीं जंगल है और उसमें रहने वाले लोग जानवर। हम बदलाव की आँधी में बहकर इतनी दूर ना निकल जाए कि अपनी ही धरोहर को खो बैठक और अपने ही पास अपने बच्चों को देने के लिए कुछ शेष ना रह जाए।

## समाज और परिवार का समायोजन सेतु है नेतृत्व करती नारी :–

आत्मकेन्द्रण के तलैयो ने जहाँ हमारी संस्कृति को प्रदूषित किया है, वहीं हमारी मानसिकता में भी संकीर्णता की जलकुंभी उग आई है। जिस ताल में हम आधुनिकता के कपड़े धोते हैं, नहाते हैं, बर्तन धोते हैं और उसी कथित आधुनिकता का पानी पीते भी हैं तो निश्चित रूप से बीमारियाँ तो बढ़ना ही है। हमारे अंदर के पानी के संस्कारों की बुनियादें कच्ची कर दी हैं। आज लगभग हर बात में तनाव के साथ–साथ विश्वास का संकट समाया हुआ है। ग्रामीण अंचल में लम्बे समय से हाशिए पर रही नारी को जैसे ही मुख्य धारा में पंचायती राज के सहारे लाया गया उनके साथ भी वही विश्लेषकों, नीति निर्धारकों, चिंतकों का विश्वास डगमगाया हुआ था। लेकिन प्रारंभिक हिचकिचाहट के पश्चात् आज उसी विश्वास को बनाए रखने में सक्षम सिद्ध हुई हैं।

जहाँ एक ओर आ रही जबरन आधुनिकता, स्वच्छंदता व गुमराह स्वतंत्रता को बढ़ावा दे रही है, वहीं आज की नेतृत्व करती नारी परिवार के तारों को आधुनिकता तथा संस्कृति के मध्य समायोजन कर बाँधने का प्रयास कर रही है।

समाज में नारी द्वारा किया गया विवेकशील व्यवहार समाज को न केवल श्रेष्ठता के रूप में दृढ़ आधार देता है, विभिन्न सामाजिक अंतर्विरोधों को समायोजित करते हुए संतुलित करता है, वरन् भविष्य को भी समरसता की नींव प्रदान करता है। यह नारी ही है जो इन दिनों समाज में विभिन्न संगठनों में होने वाले विमर्श/तर्क–वितर्क/वाद–विवाद को अपने ढंग से ही संयोजित करती हैं और नवीन समाज की रचना में अपना अमूल्य योगदान देती है।

अक्सर हम कुछ नहीं तो हर बात के लिए पश्चिम को कोस रहे होते हैं, परन्तु पश्चिम में अभी भी सब कुछ अपनी जगह बनाए हुए हैं। सिनेमा के आ जाने से नाटक कला नहीं खत्म हो गयी। टी.वी. ने सिनेमा को नहीं हड़प लिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने किताबों सहित सारे प्रिंट मीडिया को निकाल बाहर नहीं किया और न ही आधुनिकता ने पुरानी संस्कृति को जार–जार नहीं किया। दरअसल, वहाँ

हर चीज एक विकास क्रम में आई और संस्कार बनकर एक खास जरूरत की हैसियत से जीवन में शामिल हो गई। हर नई चीज का पुरानी चीजों के साथ समायोजन हो गया। जबकि हमारे यहाँ हर नई चीज भड़भड़ाते हुए पुरानी चीजों को रौंदती–कुचलती आई। नतीजतन हड़कंप मचता रहा। वर्तमान परिदृश्य वस्तुतः भारतीय संस्कृति का क्षरण काल है, जहाँ कर्मनिष्ठा के साथ–साथ मानवीय मूल्यों में बेतहाशा गिरावट आई है। धर्म को विदूरप बनाकर, विश्वास की दीवारों को हिलाकर, भौतिकतावाद की बढ़ती आग के तले सभी को उपभोक्तावादी सोच में उलझाकर विषयनिष्ठा से जोड़ दिया है। ऐसे में आज फिर नारी के उस योगदान की आशा प्रासंगिक हो गई है जहाँ से समायोजन को सेतु बाँधा जा सकता है।

जिस प्रकार भोजन में संतुलन आवश्यक होता है उसी तरह हमारे महत्वाकांक्षाओं में भी संतुलन आवश्यक है, वरना अजीर्ण होने की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं। नारी अपने प्रयासों से अपने परिवार की उन महत्वाकांक्षाओं पर लगाम लगाने का कार्य पूर्ण समझ के साथ कर सकती हैं। क्योंकि उसे सारे मसालों में संतुलन बखुबी आता है। वे ही विवेकानंद के इस नारे को सार्थक कर सकती हैं, 'उठो, जागो और उद्देश्य की प्राप्ति होने तक मत रूको।'

कुल मिलाकर नेतृत्व करती नारी को समाज की बेहतरी के लिए बहना होगा नदी की तरह। सामाजिक समागम, आपसी समझ का विचार, समस्याओं के मूल में जाने की प्रवृत्ति, आत्मविश्लेषण, धैर्य... इन सभी छोटी–छोटी नदियों को जिस तरह से उन्हें अपनी नदी में प्रवेश दिया है वह आज अपने परिणाम दिखा रहा है। ऐसा नहीं है कि विचारगत अंतर नहीं होंगे, समस्याएँ नहीं होंगी, वे भी होंगी... नदी के दो किनारे कहाँ मिलते है एक–दूसरे से... फिर भी, वे साथ–साथ चलते हैं, एक दूसरे के समानांतर। विभिन्न नदियों में व्यापक अधकचरेपन की सफाई और उनके आधुनिकता के उथलेपन को मिटाने के लिए मुहीम नारी को ही मुखिया बन कर चलानी होगी तथा उन्हें अपने व समाज के जीवन में भी उतारना होगा... ताकि हम जीवन की इस दौड़ में अधकचरे न रह जायें। बकौल शायर, ''डाले गए पत्थर इस वास्ते आगे/ठोकर से अगर होश संभल जाए तो अच्छा।'

## आधुनिक भारतीय नारी :–

आखिर क्यों हमेशा एक लड़की या एक औरत को ही अपना सब कुछ त्याग देना पड़ता है ? फिर वे शिक्षित हो या अशिक्षित इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। उसे ही अपना सब कुछ छोड़ना पड़ता है। शादी के बाद अपना घर, माता–पिता, भाई–बहन यहाँ तक कि अपनी पढ़ाई, अपना भविष्य भी वह अपने ससुराल वालें के लिए छोड़ देती है। वह पूरा दिन घर में काम करती है, उसके लिए उसे कोई पैसे नहीं मिलते, पर वह उन पैसों की कोई कामना भी नहीं करती। वह हर सांचे में खुद को ढ़ाल लेती है। वह शादी के बाद अपने ससुराल वालों के रंग–ढ़ंग में रच–बस जाती है। और ये सब अपने परिवार की खुशी के लिए करती है। सोचिए अगर किसी पुरुष या लड़के को अपने परिवार के लिए सब कुछ छोड़ने को कहं तो क्या वो छोड़ देगा ? यह कदाचित संभव नहीं है। वह ऐसा कभी भी नहीं करेगा। पर एक लड़की औरत ऐसा करेगी क्योंकि उसके दिल में सबके लिए प्यार होता है। उसे सबकी चिंता होती है।

आज का समाज इतना आगे निकल चुका है, परंतु फिर भी न जाने क्यों कुछ असामाजिक तत्त्व हमारे समाज में मौजूद हैं आज भी। इनके रहते हमारा समाज आगे कैसे बढ़ सकता है भला ! क्या आपको लगता है कि हमारा समाज आगे हैं ? मुझे तो नहीं लगता।

पता नहीं आज का समाज चाहता क्या है ? क्यों आज के समाज ने उन्हें चुना है जिनका मन बहुत साफ होता है, चाहे तो लड़कियाँ हों या फिर गृहणियाँ, उनका मन शीशे की तरह साफ होता है, एक नए खिले फूल की कली जितना कोमल और नाजुक होता है। एक ऐसा साफ शीशा जिसमें वह हर किसी को झांकने की इजाजत दे देती है। पर वह ये कभी नहीं चाहेगी कि कोई उसके कली जैसे कोमल और नाजुक दिल को ठेस पहुँचाए, उसके साथ खिलवाड़ करे या उसे रौंद दे, कुचल दे। यह हक किसी को नहीं है।

हमारे समाज में कुछ हिस्से ऐसे भी हैं, जहाँ पर औरतों ने काफी तरक्की भी की है और कुछ हिस्से ऐसे हैं जहाँ पर उन्हें बोझ समझा जाता है। क्यों हमेशा और तो लड़कियों को ही किसी बात की आजादी नहीं मिलती। उन्हें भी हक है सुख से रहने का, अपना जीवन आजाद होकर जीने का। जहाँ तक मेरा ख्याल है–उन्हें पूरा–पूरा हक है और उनहें यह हक मिलना चाहिए। आज के समाज में मेरे हिसाब से 73 प्रतिशत औरतें–लड़कियाँ हर जगह आगे हैं। पूर्व राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल, वो भी तो एक लड़की थीं। उन्होंने भी तो हमारे देश की सारी बागडोर संभाले हुए थीं। कुछ ऐसे उदाहरण और भी हैं : जैसे कि–सोनिया गाँधी, मदर टेरेसा, सानिया मिर्जा, साइना नेहवाल, किरण बेदी और आप लोग जानते हैं कि उस समय में जब भारत आजाद हुआ था, उसके कुछ वर्षों बाद श्रीमती इंदिरा गाँधी हमारे देश भारत की पहली महिला प्रधानमंत्री थीं, वे भी एक औरत ही थीं।

इतना सब कुछ देखने और सुनने के बाद भी पता नहीं क्यों लोगों को आज भी ऐसा लगता है कि लड़कियाँ बोझ हैं। सब कहते हैं हमारा देश तरक्की कर रहा है। लोगों का कहना है कि हम पहले के मुकाबले काफी हद तक पढ़–लिख गए हैं, हम काफी हद तक शिक्षित हैं, अब भी हमारे समाज में लड़का और लड़की के बीच बहुत ज्यादा भेदभाव किया जाता है और यह बात हम सबसे छिपी नहीं है।

इस बात से हम अच्छी तरह से वाकिफ हैं कि एक ही घर में अगर लड़का जन्म ले तो उसकी खुशी में मिठाइयाँ बाँटी जाती हैं, उत्सव मनाया जाता है, और वहीं दूसरी ओर अगर लड़की का जन्म हो जाता है तो उसे बोझ माना जाता है, उसकी तुलना एक बोझ के साथ की जाती है। यह माना जाता है कि वह अपने परिवार वालों का कल्याण नहीं करा सकती। वह उनका वंश आगे नहीं बढ़ा सकती और तो और उसे जन्म लेने का हक नहीं है। हमारे देश के कई हिस्सों में लड़की को उसके जन्म से पहले ही उसे जन्म लेने का भी हक नहीं है। हमारे देश के कई हिस्सों में लड़की को उसके जन्म से पहले ही उसे उसकी माँ के पेट में मार दिया जाता है, या फिर उसे दूध के उबलते कढ़ाइयों में डाल दिया जाता है, या उसे जिंदा गाड़ दिया जाता है। उस नन्ही–सी जान को बड़ी बेरहमी से मार दिया जाता है और इस पक्षपात का शिकार और काई नहीं, बल्कि हमारे समाज के वो नाजुक स्तम्भ हैं, जिसे हम लड़की औरत के नाम से जानते हैं।

इस समाज में औरतों को हमेशा ही अपनी हक के लिए तरसना पड़ा है। उसके जन्म से लेकर उसके बड़े होने तक, उसकी शादी होने तक या उसका जीवन समाप्त होने तक। जब वह छोटी होती है तो माता–पिता सोचते हैं इसे पढ़ाने–लिखने में पैसा खर्च करने से क्या मतलब इसे तो शादी करके ससुराल ही जाना है। वहाँ अपना घर बसाना है। जब वह अपने माता–पिता के घर आती है तो वो उनके लिए काम करती है। शादी के बाद भी उसे दहेज न लाने पर या कम दहेज लाने पर मारा–पीटा जाता है। उसके साथ जानवरों से भी बुरा बर्ताव किया जाता है। यहाँ तक कि उसे जान से भी मार दिया जाता है और अगर वह पढ़–लिख भी जाए तब भी इस समाज ने उनके लिए कुछ सीमाएँ निर्धारित कर दी हैं। उन्हें उस सीमा में ही रहना पड़ता है। आखिर क्यों हमेशा एक लड़की या एक औरत को ही अपना सब कुछ त्याग देना पड़ता है ? फिर वे शिक्षित हो या अशिक्षित इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। उसे ही अपना सब कुछ छोड़ना पड़ता है। शादी के बाद अपना घर, माता–पिता, भाई–बहन यहाँ तक कि अपनी पढ़ाई, अपना भविष्य भी वह अपने ससुराल वालों के लिए छोड़ देती है। वह पूरा दिन घर में काम करती है, उसके लिए उसे कोई पैसे नहीं मिलते, पर वह उन पैसों की कोई कामना भी नहीं करती। वह हर साँचे में खुद को ढ़ाल लेती है। वह शादी के बाद अपने ससुराल वालों के रंग–ढंग में रच–बस जाती है। और वह ये सब अपने परिवार की खुशी के लिए करती है। सोचिए अगर किसी पुरुष या लड़के को अपने परिवार के लिए सब कुछ छोड़ने को कहें तो क्या वो छोड़ देगा ? यह कदाचित संभव नहीं है। वह ऐसा कभी भी नहीं करेगा। पर एक लड़की औरत ऐसा करेगी क्योंकि उसके दिल में सबके लिए प्यार होता है। उसे सबकी चिंता होती है।

हम हमारे देश का भविष्य हैं, उसका आने वाला कल हैं। यह हमें सोचना चाहिए कि हमारे देश से इन असामाजिक तत्त्वों को कैसे हटाया जाए। हमारे देश का उद्धार कैसे हो। इन अत्याचारों से, पक्षपात से औरतों लड़कियों को कैसे दूर रखा जाए। हम यह कर सकते हैं, क्योंकि हम पर देश का भविष्य टिका हुआ है। हमें इन अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठानी होगी। उन्हें उनका हक दिलाना होगा। तभी हमारे देश का उद्धार संभव है। हमें अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठानी है, औरतों को जीने की आजादी दिलानी है।

भारतीय नारी के अनेक स्वरूप हैं। विश्व गुरु के पद पर आसीन भारत की उन ऋषि–पत्नियों की, जो ज्ञान व विद्वता में इतनी आगे कि शास्त्रार्थ में याज्ञवल्क्य जैसे ऋषियों को भी टक्कर देतीं गार्गी, अपाला, मैत्रेयी ? अष्टावक्र जैसे विद्वान् को जन्म देने की लालसा में पति द्वारा अपने शिष्यों को दिए गए ज्ञान को आत्मसात करतीं, परन्तु इसी कारण अपने पति द्वारा श्रापित कुरूप संतान को जन्म देने को विवश माँ ? अपने पति के साथ युद्ध में उसके साथ जा उसकी शक्ति बन अर्द्धांगिनी का धर्म निभाने वाली वीरांगनाओं की बात करूँ या फिर आज की अत्याधुनिक कहलाने वाली उस नारी की जो अपने भौतिक सुखों के लिए अपने परिवार, पति यहाँ तक कि अपने बच्चों का भी त्याग कर केवल धन को ही सर्वोपरि मान बैठी हैं ? आधुनिक समाज की अत्याधिक पिछड़े वर्ग की अनपढ़, समाज से उपेक्षित महिलाओं पर होते हर अत्याचार को सहती नारी ? या फिर पढ़े–लिखे समाज में रहने वाली आधुनिकता की होड़ में भाग लेती, मध्यम व निम्न मध्यम वर्ग की नारी जो बराबरी की होड़ में अपना सब कुछ भूलती जा रही हैं–अपने संस्कार, अपनी परिपाटी, परिवार यहाँ तक कि अपना 'स्व' भी।

पर आज हम कुछ ऐसी आधुनिक महिलाओं का स्मरण करना चाहते हैं जिनकी उपलब्धियाँ हमें प्रेरणा देती हैं। चेनम्मा, रानी दुर्गावती, रजिया सुल्ताना, महारानी लक्ष्मीबाई, माँ जिजाबाई या देवी अहिल्याबाई तो अब हमारे लिए इतिहास बन गई हैं। स्वामी विवेकानंद के साथ आई. मार्गरेट जिसने पूरे समर्पण भाव से इस देश के लिए कार्य किया और भगिनी निवेदिता के नाम से प्रसिद्ध हुई। या फिर महर्षि अरविंद के साथ कार्य करने के आई मार्गरेट जो श्रीमाँ के नाम से प्रसिद्ध हुई। आज भी पांडुचेरी में उनके द्वारा निर्मित ऑरोविल के नाम से बहुत बड़ा आश्रम चल रहा है। राष्ट्र सेविका समिति जैसे महिला संगठन का गठन करने वाली वंदनीया मौसी जी के नाम से प्रसिद्ध लक्ष्मी बाई केलकर जैसी अनेक महिलाएँ आज भी इतिहास लिख रही हैं। इस कड़ी में कल्पना चावला का नाम तो एक ऐसा नाम है जो अविस्मरणीय है। राजनीति में मैडम कामा, इंदिरा गाँधी, समाज सेवा के क्षेत्र में मेधा पाटेकर खेलों में सानिया मिर्जा या फिर सुनीता विलियम जैसे अनेक

नाम हैं। हर क्षेत्र में आज महिलाएँ कुछ बेहतर कर रही हैं। बल्कि वे हर क्षेत्र में ये चमत्कार कर रही हैं कि वे पुरुषों से बेहतर हैं। परंतु गुलाम मानसिकता से जकड़े समाज में वह इतना प्रताड़ित की गईं कि आज वह यही सब करने में जुटी हुईं है, और जहाँ वह कमजोर पड़ती है कि पुरुष प्रधान समाज उसे प्रताड़ित करने का कोई मौका नहीं छोड़ता।

वह भूल रही है कि ईश्वर ने उसे एक आलौकिक शक्ति दी है। वह है सृजन करने की। इसी शक्ति के कारण हम उसे किसी से भी अलग नहीं कर सकते, बल्कि वह ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है। बस आवश्यकता है उसे पहचानने की। हममें वो शक्ति है कि हम इस समाज को जैसा चाहें वैसा ही ढाल सकते हैं। बच्चों को जो शिक्षा देना चाहें दे सकते हैं। यानि कि इस देश, समाज को जैसा बनाना चाहें बना सकता हैं। आज पुनः इस देश को आवश्यकता है माँ जिजा की। माँ सीता की या फिर पुत्री का धर्म निभाने वाली सुकन्या की। उसे अपने परिवार, अपने समाज व अपने देश के लिए पुनः उस वैदिक स्त्री के रूप में आना होगा। लेकिन इसकी जिम्मेवारी अकेले उसकी नहीं, हम सभी की होगी। तो फिर कोई ताकत हमें रोक नहीं पाएगी और हम पुनः विश्व गुरू के चरण को छूने को तैयार होंगे।

सत्य तो यह है कि आधुनिक भारतीय महिला परंपराओं से चाहे इतनी न बंधी हो पर पुरुषों प्रधान समाज बनाई गई विधियों के साथ उसे जोड़ने कि हमेशा कोशिश की गई है। क्योंकि भारतीय पुरुष कभी नहीं चाहते कि नारी उनसे आगे बढ़े और उनके विपरीत आवाज उठाये। पुरुषों को हमेशा ऊँचा देखने वाली परम्पराएँ और अलिखित नियम आधुनिक नारी की सफलता को नहीं देखता क्योंकि भारतीय समाज में उन्हें पुरुष होने का गर्व दिया हैं। महिलाओं के अधिकारों को दुरुपयोग करने के लिये भी यह पुरुष वर्ग है। भारतीय समाज में पुरुष वर्ग चाहे कितना भी गलत होगा पर यह समाज हमेशा सही बताएगा जैसे की यह कोई कानून हो।

यदि भारतीय पुरुषों को वास्तविक आधुनिक भारतीय नारी पर गर्व करना है तो उन्हें सामाजिक और पारंपरिक दृष्टि को बदलने के साथ उन्हें सम्मान करना सीखना होगा।

कहने को तो भारतीय पुरुष आधुनिक नारी का बहुत सम्मान करते हैं साथ में उनको उनके आधुनिक होने का गर्व है, परन्तु यह कहाँ तक सही है ?

ग्लोबल ग्रे कंपनी के सर्वेक्षण के मुताबिक आज भी 85 प्रतिशत भारतीय पुरुष स्टीरियोटाइप नारी के साथ जीवन ज्यादा बिताना पसंद करते हैं क्योंकि उनका मानना है वो आधुनिक नारी से ज्यादा देखभाल और सम्मान करेगी और अधिकतर उनके कहे पर चलेगी। इसके साथ कुछ परम्पराओं का पालन करने को तैयार रहेगी। अधिकत्तर पुरुषों का कहना है कि आधुनिक नारी विचारों में बहुत स्वतंत्र और नारीवादी सिद्धांतों का ज्यादा उपयोग करेगी। जिससे उनका सामाजिक संस्कृति व परिवार पर विपरीत प्रभाव पड़ सकता है।

भारतीय द्वारा पाश्चात्य देश अक्सर आधुनिक रूप में माना जाता है। उनके अनुसार पश्चिमी प्रभावित नारी ही आधुनिक है क्योंकि उनको लगता है पश्चिमी महिलाएँ ही अधिक स्वतंत्र हैं, परन्तु यह सच है भारत में आधुनिक महिला की स्थिति विरोधाभास की तरह है। उसकी आत्म छवि संस्कृति पर आधारित की हुई है जो उसके प्रगति में हमेशा बाधा है। बहुत से भारतीयों के विचार हैं जो महिलाएँ पश्चिमी देशों की महिलाओं जैसे कपड़े पहनने के साथ अंग्रेजी भाषा में बात करती है वही आधुनिक नारी है। इसके साथ हर क्षेत्र में एक अपरिभाषित लिबर्टी के अंधे अवधारणा का अनुसरण करती है।

## संदर्भ स्रोत :–


1. कुमारी, जयवर्धना (1999) : एनिबॉडी वॉयलेन्स कम्यूनिसिटिंग वूमैन एन साउथ एशिया, काली फॉर वूमैन, नई दिल्ली, पृ.–91–93
2. गुप्त, दिनेशचन्द्र, (1989), अनैतिक अपराध, मल्होत्रा'' पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृ.–15–18
3. चौहान, आभा (1990), ''ट्राइवल वूमन एण्ड सोशल चेन्जेस इन इंडिया'', इंदौर पब्लिकेशन, पृ.–36–38
4. जैन, देवकी (1989), 'दि सेल्फ एम्पलॉयड वीमेंस एसोसिएशन, हॉव पत्रिका के फरवरी अंक में पृष्ठ 14 पर प्रकाशित आलेख, अहमदाबाद, पृ.–42–45
5. जैन, एस.के. (1999), ''महिलाओं का उत्पीड़न एवं विधिक उपचार'', इंडिया लॉ हाऊस, इन्दौर, पृ.–51–53
6. झुनझुनवाला, मधु भारत, (1999), ''महिला आरक्षण'', जनवाणी प्रकाशन प्रा0 लि0 नई दिल्ली, पृ0–112–115

7. तिवारी, आर.पी., शुक्ला, डी.पी., (1999), ''भारतीय नारी वर्तमान समस्यायें और भावी समाधार'', ए.पी.एच., पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन नई दिल्ली, पृ.–126–128
8. निकुंज, मिनाक्षी एवं पंवार, (1994), ''नारी उत्पीड़न की समस्या एवं समाधान'', नई दिल्ली, पृ.–136–140
9. अंसारी, एम.ए. (2001) : महिला और मानवाधिकार, ज्योति प्रकाशन, जयपुर
10. अग्रवाल, जे.सी. : भारत में नारी शिक्षा, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
11. अंसारी, एम.ए. (2001) : राष्ट्रीय महिला आयोग और भारतीय नारी, ज्योति प्रकाशन, जयपुर
12. आरजू, एम.एच. (1993) : भारतीय महिला और आधुनिकरण, कॉमनवेल्थ पब्लिशर्स, नई दिल्ली
13. आहूजा, राम (1998), वॉयलेन्स अगेंस्ट वूमैन, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर
14. आहूजा, राम (1997), ''क्राइम अगेन्स्ट वूमेन'', कॉमन वेल्थ पब्लिशिंग, दिल्ली
15. जैन, देवकी (1989), 'दि सेल्फ एम्प्लॉयड वीमेंस एसोसिएशन, हॉव पत्रिका के फरवरी अंक में पृष्ठ 14 पर प्रकाशित आलेख, अहमदाबाद
16. जैन, एस.के. (1999), ''महिलाओं का उत्पीड़न एवं विधिक उपचार'', इंडिया लॉ हाऊस, इन्दौर
17. झुनझुनवाला, मधु भारत, (1999), ''महिला आरक्षण'', जनवाणी प्रकाशन, प्रा.लि., नई दिल्ली
18. तिवारी, आर.पी., शुक्ला, डी.पी., (1999), ''भारतीय नारी वर्तमान समस्यायें और भावी समाधान'' ए.पी.एच., पब्लिशिंग कार्पोरेशन, नई दिल्ली
19. बसन्ती, बाबेलाल (2003), ''महिला एवं बाल कानून'', सेन्ट्र लॉ एजेन्सी मोतीलाल नेहरू रोड, ईलाहाबाद
20. रायवार, चन्द्रशेखर एवं ममता, चन्द्रशेखर (2001), 'महिला सशक्तीकरण अवधारणा'', यथार्थ प्रकाशन, इन्दौर
21. सिंह, इंदुप्रकाश (1985), डायलेटिक्स ऑफ लॉ एंड स्टेट्स ऑफ इंडियन वीमेन, समाज व्यवस्था अध्ययन केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली